आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:01-10-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ईश्वरीय श्रीमत् देकर नास्तिक से आस्तिक बनाने वाले ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - निराकार बाप तुम्हें अपनी मत देकर आस्तिक बनाते हैं, आस्तिक बनने से ही तुम बाप का वर्सा ले सकते हो.

आस्तिक आत्मा कहा जाता है जो परमपिता-परमात्मा को जानकर कर, उसकी श्रीमत् को मानकर, उसे अपना बनाकर शूद्र से ब्राह्मण आत्मा बने हैं. जो आत्मा ये परमात्मा को ही नहीं जानते, अपने पिता को ही नहीं पहचानते, जो देह-धारी यों में, पत्थरों में, पशुओं में या फिर नेचर को ही भगवान समझते है वह सब आत्मा ये नास्तिक है क्योंकि उन्हें सत्य बाप का परिचय नहीं हैं. आस्तिक बनने से बाप से वर्सा मिलता है, नास्तिक को बाप से वर्सा नहीं मिलता हैं.

बाबा ने आज मुरली में हमें दो मुख्य श्रीमत् दी हैं - १. मनमनाभव - अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करो. २. यज्ञ सेवा करो.

बाबा की यह दो श्रीमत् को हम अच्छी तरह से पालन करें इसलिए बाबा की आज की मुरली से इन दो श्रीमत् पर कहे गये महा-वाक्यों को हमारी आत्मिक अवस्था में रहकर बाप की याद में फिर से पढ़ेंगे.

याद पर कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते हैं, तुम्हारे तीर्थ हैं - घर में बैठ चुपके से मुक्तिधाम पहुँचना. दुनिया के तीर्थ तो कॉमन हैं, तुम्हारे हैं न्यारे. तुम बच्चों को तो सिर्फ बाप को ही याद करने का डायरेक्शन मिलता है. यह एक निराकारी मत निराकार बाप ही देते हैं, जिससे मनुष्य ऊंच ते ऊंच पद जीवनमुक्ति वा मुक्ति पाते हैं.

- बाबा कहते हैं, सतयुग में होती है एक मत. कलियुग में हैं अनेक मत. यहाँ तुम बच्चों को एक ही बाप ऊंच ते ऊंच मत देते हैं, ऊंच ते ऊंच बनाने की.

- बाबा कहते हैं, तुम्हें ऑफिस में काम करते भी बाप को याद करना हैं. इसे ही तुम कर्मयोगी कहलायेंगे. यह है तुम्हारा अजपाजाप. इसे ही मनमनाभव कहते है - इस कलियुग में रहते तुम्हें हर कर्म करते तुम्हें बुद्धि से बाप को याद करना हैं.

ईश्वरीय सेवा पर कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते है यह रचता और रचना के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान तुम्हें सबको देना हैं. जो ज्ञान से तुम आस्तिक बने हो, बाप के वर्से का हकदार बने हो. वही ज्ञान औरों को देकर नास्तिक से आस्तिक बनाओ.

- बाबा कहते है तुम्हें सबको बताना है कि बाबा भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते हैं. नई दुनिया निराकार बाप ही आकर स्थापन करते हैं. यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी इस लिए ही भक्ति में गाया हुआ हैं.

- बाबा कहते है यह ईश्वरीय सेवा करने वाले बच्चों को ज्ञान की धारणा अच्छी होनी चाहिए. जीतनी अच्छी धारणा रख सेवा करेंगे उतनी ही सेवा में बढ़ोतरी होती जायेगी.

- बाबा कहते है भक्ति में सब गाते भी है - पतित-पावन, भक्तों का भगवान एक. तो पहले-पहले कोई सेन्टर में आये तो बाप का परिचय दो. (यह भी तब होगा जब स्वयं बाप की याद में होगे!). उनको बताओ कि बेहद का बाप आते ही है बेहद का सुख का वर्सा देने. उन्हें अपना शरीर नहीं है इसलिए इस ब्रह्मा तन का सहारा लेकर बच्चों को राजयोग पढ़ाकर, बच्चों स्वर्ग में ऊंच पद प्राप्त करवाते हैं.

- बाबा कहते हैं तुम यह छोटे से मैडल पर भी सबको समझा सकते हो. सबको बताओ, बेहद का बाबा इस ब्रह्मा तन में बैठ समझाते है. मनुष्यों को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं. हम उस बाप से हम प्रीत रखते हैं.

- बाबा कहते हैं प्रदशनी में भी तुम बच्चे समझा सकते हो. जो जास्ति सर्विस करते है वह जरूर ऊंच पद पायेंगे. यह लक्ष्मी-नारायण का ट्रांस लाइट का चित्र भी कितना फ़स्टॅक्लास है. उस पर भी तुम समझा सकते हो. तुम इस चित्र को देखते ही तुम्हें मूलवतन, सूक्ष्मवतन और स्थूलवतन सारा बुद्धि में आ जायेगा. जैसे बाबा को यह चित्र देखकर बहुत खुशी होती है ऐसे तुम्हें भी इस चित्र से बहुत खुशी होगी. इसे देखने से मन में आता है कि भविष्य में हम जाकर ऐसा बनेंगे.

- बाबा कहते हैं तुम शिव भक्तों को भी यह ज्ञान दो. उन्हें बताओ कि शिवबाबा को याद करेंगे तो तुम राजाओं का राजा बन जायेंगे. सवेरे जाओ मन्दिर में रात को लौट कर आओ. सबसे जास्ति तुम शिव के मन्दिर में जाकर सर्विस कर सकते हो. ऊंच ते ऊंच है ही शिवबाबा का मन्दिर. सारा दिन जाकर बहुतो का कल्याण कर सकते हो. ॐ शांति.